इकाई 11 उद्योग का आकार : अवधारणा एवं महत्त्व

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य
11.1 प्रस्तावना
11.2 अनुकूलतम फर्म की अवधारणा
  11.2.1 आलोचना
11.3 मोडल फर्म
  11.3.1 आलोचना
11.4 प्रतिनिधि फर्म
  11.4.1 आलोचना
11.5 संतुलन या साम्य फर्म
11.6 आकार के निर्धारक
  11.6.1 संयंत्र आकार में अन्तरराष्ट्रीय अंतर
  11.6.2 आकार को प्रभावित करने वाले घटक
11.7 तकनीकी घटक
  11.7.1 श्रम का विभाजन और विशेषज्ञता
  11.7.2 अविभाज्यता
  11.7.3 बड़ी मशीनों की मितव्ययिता
  11.7.4 प्रचालन में मितव्ययिता
  11.7.5 सम्बद्ध प्रक्रियाओं की मितव्ययिता
  11.7.6 सीखने का प्रभाव
  11.7.7 प्रौद्योगिकी का स्वरूप
  11.7.8 निर्गत दर
  11.7.9 बहु-संयंत्र प्रचालन
11.8 अन्य निर्धारक
  11.8.1 प्रबन्धकीय घटक
  11.8.2 वित्तीय घटक
  11.8.3 विपणन घटक
  11.8.4 जोखिम घटक
  11.8.5 रोजगार घटक
  11.8.6 विविध घटक
11.9 आकार की सीमा
  11.9.1 प्रबन्धकीय बाधाएँ
  11.9.2 तकनीकी बाधाएँ
  11.9.3 परिवहन लागत और विपणन घनत्व
  11.9.4 पूँजी की कमी
  11.9.5 व्यक्तिगत सीमाएँ
  11.9.6 श्रम समस्याएँ
  11.9.7 सामाजिक अथवा संस्थागत बाधाएँ
11.10 आकार का चयन
11.11 सारांश

11.12 शब्दावली
11.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ
11.13 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- फर्मों के विभिन्न प्रकारों के बीच भेद कर सकेंगे;
- फर्म की कार्यकुशलता और लाभप्रदता के लिए इसके आकार का महत्त्व समझ सकेंगे;
- फर्म के आकार को प्रभावित करने वाले घटकों की पहचान कर सकेंगे; और
- उन स्थितियों के बारे में बता सकेंगे जिनमें क्रमश: बृहत् और लघु आकार के फर्म सापेक्षिक लाभ में होते हैं।

11.1 प्रस्तावना

उद्योग का आकार इसकी कार्यकुशलता और लाभप्रदता का एक महत्त्वपूर्ण निर्धारक है। विभिन्न उद्योगों का उनके आकार के आधार पर बृहत् उद्योग और लघु उद्योग में वर्गीकरण अधिक प्रचलित है। इन दोनों के बीच मध्यम आकार के उद्योगों का समूह होता है जिसे मध्यम क्षेत्र कहा जाता है। तथापि, आकार और लाभप्रदता के बीच संबंध स्पष्ट रूप से प्रमाणित नहीं है। कतिपय उद्योग और उत्पादन-व्यवसाय हैं जिसमें फर्म की लाभप्रदता उत्पादन के न्यूनतम पैमाने पर निर्भर करती है; इस प्रकार के उद्योग, अधिकांशतया स्वाभाविक रूप से एकाधिकारवादी भी हो सकते हैं, अर्थात् वे पैमाने की उत्पत्ति वृद्धि नियम के अधीन हैं। दूसरी ओर, कुछ उत्पादन व्यवसाय और उद्योगों में बृहत् पैमाने पर उत्पादन अकुशलता को जन्म देता है और इससे उत्पादन लागत तथा उत्पादकता दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उद्योग के लिए एक अनुकूलतम आकार होता है, और यदि कोई फर्म इस अनुकूलतम आकार से अधिक बड़ी है अथवा अधिक छोटी है तो उसे अकुशलता का सामना करना होगा। अर्थशास्त्रियों ने इस स्थिति को दर्शाने के लिए अनुकूलतम फर्म, प्रतिनिधि फर्म इत्यादि अवधारणाओं का प्रतिपादन किया है।

इस इकाई में हम इन अवधारणाओं की जाँच करेंगे तथा फर्म के आकार और कार्यकुशलता एवं लाभप्रदता के बीच संबंध और इसी प्रकार के अन्य मानदंडों का भी अध्ययन करेंगे।

11.2 अनुकूलतम फर्म की अवधारणा

अनुकूलतम फर्म की अवधारणा का प्रतिपादन ई.ए.जी. रॉबिनसन द्वारा किया गया है। 'अनुकूलतम फर्म' से हमारा अभिप्राय उस फर्म से है जिसमें तकनीकी विधियों और संगठन योग्यता की विद्यमान दशाओं में प्रति इकाई औसत उत्पादन लागत न्यूनतम होती है, उसमें जबकि सभी लागतें सम्मिलित कर ली जाती हैं जिन्हें दीर्घ काल में सम्मिलित करना आवश्यक होता है।

इस संबंध में कुल लागत में वे सभी लागत सम्मिलित होते हैं जो किसी निर्गत के उत्पादन पर आता है– इसमें न सिर्फ श्रम और कच्चे माल का प्रकट लागत, अपितु समुचित लाभ की दर तथा सभी अन्य परोक्ष लागत भी, जिन्हें फर्म की उत्तरजीविता के लिए सम्मिलित करना आवश्यक है, को सम्मिलित किया जाता है।

अनुकूलतम फर्म का प्रादुर्भाव उत्पाद बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता की दशाओं से सुनिश्चित होता है। पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में, बड़ी संख्या में सजातीय उत्पादों का उत्पादन करने वाले फर्म विद्यमान होते हैं। प्रत्येक फर्म 'प्राइस-टेकर' (price taker) अर्थात् मूल्य ग्रहण करने वाली फर्म होती है तथा उत्पाद का मूल्य माँग और आपूर्ति की बाज़ार शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है।

संतुलित (आदर्श) बाज़ार यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक फर्म अपने न्यूनतम दीर्घकालीन औसत इकाई लागत (LAC) पर उत्पादन करता है और वह फर्म सिर्फ सामान्य लाभ अर्जित करता है। यह इस तथ्य द्वारा भी सुनिश्चित होता है कि इस प्रकार की बाज़ार संरचना में प्रवेश और बहिर्गमन पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है। असामान्य लाभ नए फर्मों को आकर्षित करता है और इस प्रकार बाज़ार में आपूर्ति में वृद्धि होती है, फलत: बाज़ार मूल्य उस स्तर तक नीचे गिरता है जहाँ यह औसत इकाई लागत के बराबर हो जाता है, इसी प्रकार घाटे में चलने वाले फर्म बंद हो जाते हैं फलस्वरूप आपूर्ति में कमी आती है और परिणामस्वरूप बाज़ार मूल्य में वृद्धि होती है।

संक्षेप में, पूर्ण प्रतियोगिता यह सुनिश्चित करती है कि एक उद्योग में सभी फर्मों का प्रचालन अनुकूलतम स्तर पर हो, अर्थात् अंतत: प्रचालन में रह गई सभी फर्में अनुकूलतम फर्म हैं।

11.2.1 आलोचना

तथापि, अनुकूलतम फर्म की अवधारणा की कटु आलोचना की गई है। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

एक, व्यवहार में पूर्ण प्रतियोगिता की दशा विद्यमान रहने की संभावना बहुत ही कम होती है और प्रतियोगिता की पूर्णता की मात्रा की माप करना असंभव है।

दो, यद्यपि कि पूर्ण प्रतियोगिता के अस्तित्त्व में यह पूर्ण मान्यता निहित रहती है कि फर्म अनुकूलतम आकार के हैं, किंतु पूर्ण प्रतियोगिता की अनुपस्थिति का अभिप्राय यह नहीं है कि फर्म अपने अनुकूलतम आकार से अनिवार्यत: काफी अलग आकार का होगा।

तीन, तथ्यात्मक जाँच द्वारा बहुधा यह पता करना संभव नहीं है कि विभिन्न उद्योगों में एक फर्म का अनुकूलतम आकार क्या है।

11.3 मोडल फर्म

'मोड' एक सांख्यिकीय औसत है। यह वितरण में प्राय: पाई जाने वाली वस्तु का मूल्य है। अनुभव सिद्ध साक्ष्य की जाँच करने पर प्राय: यह पाया जाता है कि एक उद्योग में कुल फर्मों का बड़ा अनुपात लगभग समान आकार का ही है। फर्म के इस आकार को 'मोडल आकार' माना जा सकता है और सभी फर्म जो इस आकार के सदृश हैं को 'मोडल फर्म' माना जा सकता है।

यह तथ्य कि ऐसे मोडल आकार प्रत्येक उद्योग में पाए जाते हैं, बहुधा लक्षण प्रमाण के रूप में स्वीकार किए जाते हैं और अनुकूलतम फर्मों की पहचान इनसे की जाती है। यहाँ अन्तर्निहित मान्यता यह प्रतीत होती है कि इस तथ्य की गुंजाइश रखने के बाद कि कुछ फर्मों का विकास होगा और कुछ अन्य का पतन, एक उद्योग में बहुसंख्य फर्मों के अपने अनुकूलतम आकार तक

पहुँच जाने की आशा की जा सकती है।

11.3.1 आलोचना

मोडल फर्म की अवधारणा भी दोषरहित नहीं है।

एक, एक ही उद्योग में फर्म का अनुकूलतम आकार एक फर्म से दूसरे फर्म में भिन्न-भिन्न हो सकता है।

दो, अलग-अलग फर्मों में एक ही प्रकार की उद्यमिता योग्यता उपलब्ध नहीं हो सकती है।

तीन, मोडल टाइप पर विचार करने से हम कई मामलों में दिग्भ्रमित हो सकते हैं।

11.4 प्रतिनिधि फर्म

प्रतिनिधि फर्म की अवधारणा का प्रतिपादन अल्फ्रेड मार्शल ने किया है। मार्शल ने इस अवधारणा का प्रतिपादन उत्पादन लागत का अध्ययन करने की दृष्टि से किया था, जहाँ इसका निर्धारण तब होगा जब कोई फर्म उत्पत्ति वृद्धि नियम के अंतर्गत कार्यशील है।

मार्शल के अनुसार प्रतिनिधि फर्म एक ऐसी फर्म है जिसका काफी लम्बा जीवन रहा हो तथा जिसे पर्याप्त सफलता मिल चुकी है, जिसका प्रबन्धन सामान्य योग्यता द्वारा किया जाता है तथा जिसे उत्पादन की कुल मात्रा के परिणामस्वरूप सामूहिक उत्पत्ति की बाह्य और आंतरिक बचतें प्राप्त होती है; जबकि सामान्यतया उत्पादित वस्तुओं की किस्म, उनके विक्रय की दशाओं और आर्थिक वातावरण को ध्यान में रखा जाता है।

11.4.1 आलोचना

प्रतिनिधि फर्म की अवधारणा में कई कमियाँ हैं, इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण निम्नलिखित है :

एक, प्रतिनिधि फर्म की अवधारणा अत्यन्त ही संक्षिप्त और जड़ है जिससे इसकी व्यावहारिक उपयोगिता काफी कम रह जाती है। **दो**, ऐसी कई छोटी फर्में हैं जिनके लिए लम्बे कार्यकाल के बाद भी विस्तार करना लाभप्रद नहीं हो सकता है। **तीन**, बहुत से ऐसे फर्म हैं जिनका आकार आरम्भ से ही काफी बड़ा होता है।

संक्षेप में, यह आवश्यक नही कि प्रतिनिधि फर्म अनुकूलतम फर्म भी हो। अनुकूलतम फर्म वह है जिसकी दी गई तकनीक, ज्ञान और संगठनात्मक योग्यता में निर्गत की प्रति इकाई औसत दीर्घकालीन उत्पादन लागत न्यूनतम है।

11.5 संतुलन या साम्य फर्म

संतुलन या साम्य फर्म की अवधारणा का प्रतिपादन ए.सी.पीगू द्वारा किया गया है। एक संतुलन फर्म स्वयं संतुलन की अवस्था की स्थिति में होगा जब समस्त उद्योग संतुलन में हो।

11.5.1 आलोचना

संतुलन फर्म की अवधारणा की व्यावहारिक उपयोगिता बहुत ही कम है क्योंकि इससे संतुलन बिन्दु के निर्धारण की समस्या उत्पन्न हो जाती है। किसी भी उत्पादक द्वारा फर्म के आकार के

मामले में प्रयोग करने की आशा नहीं की जा सकती जैसी कि इस अवधारणा में परिकल्पना की गई है।

बोध प्रश्न 1

1) अनुकूलतम फर्म की परिभाषा कीजिए। इस अवधारणा की क्या सीमाएँ हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रतिनिधि फर्म क्या है? इस अवधारणा की सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) 'मोडल फर्म' की परिभाषा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) 'संतुलन फर्म की परिभाषा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

11.6 आकार के निर्धारक

'फर्म की ऊपर वर्णित विभिन्न अवधारणाओं में सबसे यथार्थवादी अवधारणा 'अनुकूलतम फर्म है। 'अनुकूलतम फर्म एक वास्तविक संभावना है। इसके अस्तित्त्व का कारण उद्यमी द्वारा सोच समझकर किए गए निर्णय और प्रतियोगी शक्तियाँ हैं। अनुकूलतम कोई अपरिवर्तनीय बिंदु नहीं है अपितु आधुनिक औद्योगिक पद्धतियों के विकास के साथ इसके भी बढ़ने की प्रवृत्ति होती है, हालाँकि अलग-अलग देशों में इसकी वृद्धि दर में काफी अंतर होता है।

11.6.1 संयंत्र आकार में अन्तरराष्ट्रीय भिन्नता

विभिन्न देशों में संयंत्रों के आकारों के तुलनात्मक अध्ययन से यह पता चलता है कि अमरीकी फर्मों का औसत आकार सबसे विशाल है। सबसे विशाल भारतीय फर्म का औसत आकार एक औसत अमरीकी फर्म का लगभग एक-चौथाई होता है। यू.के., फ्रांस, जापान, इटली और कनाडा में भी फर्मों का औसत आकार भारतीय फर्मों के औसत आकार से अधिक बड़ा है। मान लीजिए, 'किसी भी दिए गए उद्योग में सबसे विशाल 20 अमरीकी संयंत्रों में औसत नियोजन 100 है, उसके आधार पर जे.एस. बेन ने आठ देशों के नमूना के लिए निम्नलिखित मध्यवर्ती सापेक्षिक संयंत्र आकार सूचकांक निकाला है। (तालिका 11.1 देखें)

तालिका 11.1 : फर्म का आकार एक अन्तरराष्ट्रीय तुलना

देश	मध्यवर्ती 20-संयंत्र आकार सूचकांक
यू एस ए	100
यू के	78
फ्रांस	39
जापान	34
इटली	29
कनाडा	28
भारत	26
स्वीडन	13

भारत में संयंत्रों के सापेक्षिक रूप से छोटे आकार का होने के कुछ कारण इस प्रकार है : अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी में पिछड़ा होना, बृहत् पूँजी-सघन उत्पादन प्रक्रियाओं के उपयोग को हतोत्साहित करने वाला उपादान कीमत अनुपात, उच्च परिवहन लागत, आयात नियंत्रण और कतिपय क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा का अभाव इत्यादि।

11.6.2 आकार को प्रभावित करने वाले घटक

फर्म के अनुकूलतम आकार को निर्धारित करने वाला घटक बड़े पैमाने की मितव्ययिता का अस्त्वि है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि फर्म का अनुकूलतम आकार (*i*) बड़े पैमाने की मितव्ययिता और (ii) बड़े पैमाने की अपमितव्ययिता पर निर्भर करता है।

जब तक किसी उत्पादन इकाई को अपने उत्पादन क्षमता में विस्तार से बड़े पैमाने की मितव्ययिता का लाभ पहुँचता है तब तक इसका दीर्घकालीन उत्पाद फलन पैमाने की उत्पत्ति वृद्धि नियम के अधीन होगा। ऐसी उत्पादन इकाई के दीर्घकालीन औसत लागत वक्र में निरंतर अधोमुखी गिरावट आएगी। यदि एक उत्पादन इकाई इस प्रकार के उत्पादन प्रणाली के अधीन है तो इसे क्षमता का विस्तार करने, कम लागत पर उत्पादन करने तथा अपना उत्पाद कम मूल्य पर बिक्री के लिए पेश करने एवं तैयार उत्पाद के लिए और अधिक माँग पैदा करने से सदैव लाभ होगा।

किंतु जैसा कि हम नीचे देखेंगे, अधिकांशतया क्षमता की एक सीमा से आगे जिस पर उत्पाद फलन पैमाने के ह्रासमान उत्पत्ति नियम के अधीन हो जाता है, आदान और निर्गत

के बीच तकनीकी संबंध बदलता है। इस बिंदु से आगे, बड़े पैमाने की मितव्ययिता का स्थान बड़े पैमाने की अपमितव्ययिता ले लेती है। आदान में प्रत्येक वृद्धि के परिणामस्वरूप निर्गत में समानुपातिक से कम वृद्धि होती है, उत्पादन के दीर्घकालीन औसत लागत में वृद्धि होने लगती है।

पैमाने की उत्पत्ति वृद्धि और पैमाने की उत्पत्ति ह्रास दोनों स्थितियों के बीच क्षमता का एक ऐसा बिंदु (अथवा सीमित क्षेत्र) हो सकता है जहाँ बड़े पैमाने की मितव्ययिता और बड़े पैमाने की अपमितव्ययिता में संतुलन स्थापित हो जाता है अर्थात पैमाने का स्थिर उत्पादन होने लगता है। इसी बिंदु (अथवा सीमित क्षेत्र में) पर दीर्घकालीन औसत लागत न्यूनतम है। इसे न्यूनतम दक्षता पैमाना (एम ई एस) की अवधारणा भी कहा जाता है।

यह बिन्दु एक फर्म से दूसरे फर्म में, एक उत्पाद से दूसरे उत्पाद में, एक उद्योग से दूसरे उद्योग में, एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में अलग-अलग हो सकता है। इस अंतर के कारण क्या हैं?

हम एक फर्म द्वारा उत्पादन का पैमाना बढ़ाने पर फर्म को होने वाली बड़े पैमाने की मितव्ययिता अथवा अपमितव्ययिता के कारणों का अध्ययन करेंगे।

एक फर्म के लिए अनुकूलतम आकार के सभी पैमाना घटकों अथवा निर्धारकों को उनकी प्रकृति के आधार पर छः श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। ये इस प्रकार हैं :

i) तकनीकी घटक, जो किसी फर्म का तकनीकी दृष्टि से अनुकूलतम आकार निर्धारित करते हैं।

ii) प्रबन्धकीय घटक, जो फर्म को एक अनुकूलतम प्रबन्धकीय इकाई बनाने के लिए प्रासंगिक होते हैं।

iii) वित्तीय घटक, जो फर्म को अनुकूलतम वित्तीय इकाई बनाने के लिए प्रासंगिक होते हैं।

iv) विपणन घटक जो फर्म को अनुकूलतम बिक्री इकाई बनाते हैं।

v) जोखिम और उतार-चढ़ाव घटक जो परिवर्तनशील अनिश्चित औद्योगिक परिवेश में अस्तित्त्व बनाए रखने के लिए फर्म को पर्याप्त रूप से सुदृढ़ बनाते हैं।

vi) बड़ी इकाइयों को होने वाली आर्थिक लाभों सहित अन्य घटक।

यहाँ पर, विद्यार्थियों के लाभ के लिए हम यह भी बता दें कि यह आवश्यक नहीं है कि यह सभी पैमाना घटक लगभग समरूप आकार का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस तरह की विरोधाभासी परिस्थितियाँ भी हो सकती हैं जिसमें कोई घटक बड़े आकार का तो कोई घटक छोटे आकार की हिमायत करता है। कुछ संतुलनकारी समायोजन भी करना होगा ताकि किन्हीं परिस्थितियों में बड़ा आकार लाभप्रद हो तो वही कुछ भिन्न परिस्थितियों में लघु आकार लाभप्रद हो। हमारे पास इन अलग-अलग परिस्थितियों पर विचार करने का अवसर होगा।

इस समय हम यह मान लेते हैं कि संयंत्र के आकार और बड़े पैमाने की मितव्ययिता के बीच स्पष्ट संबंध है। भारत में विभिन्न उद्योगों की लागत संरचना में अन्तर-आकार भिन्नता के संबंध में एम. मेहता के शोध निष्कर्षों से पुष्टि होती है कि आकार में वृद्धि के साथ लागत में गिरावट का रुझान दिखाई पड़ता है, हालांकि गिरावट की दर सभी आकार श्रेणियों में बराबर हो, यह आवश्यक नहीं। संक्षेप और सरल प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से हम सभी छः श्रेणियों को

दो समूहों में रखेंगे :

क) तकनीकी घटक; और

ख) अन्य निर्धारक।

11.7 तकनीकी घटक

यह घटकों की मुख्य श्रेणी है जिसके कारण उत्पादन में बड़े पैमाने की वास्तविक मितव्ययिता आती है और यह हमारे द्वारा फर्म के अनुकूलतम आकार के निर्धारण में सहायक होती है। तकनीकी घटक अधिकांशतया फर्म का आकार बढ़ाने के पक्ष में सक्रिय रहते हैं। फर्म के आकार में वृद्धि से विभिन्न तकनीकी घटकों का अधिकतम लाभ उठाया जा सकता है।

11.7.1 श्रम विभाजन और विशेषज्ञता

श्रम की यथेष्ट विशेषज्ञता के और बड़े पैमाने पर उत्पादन में कार्यों को छोटे-छोटे खंडों में बाँटना सुगम हो जाता है जिसे इसी उद्देश्य के लिए विशेष रूप से डिज़ायन किए गए मशीनों से किया जा सकता है। यदि इस प्रकार का श्रम विभाजन अपनाया जाए तो इससे तीन विशेष लाभ हो सकते हैं। ये निम्नवत् हैं :

i) प्रत्येक कर्मकार की कार्यकुशलता में वृद्धि;

ii) एक कर्मकार को एक काम से हटाकर दूसरे काम में लगाने और औज़ारों तथा उपकरणों को लाने ले जाने में समय की होने वाली बर्बादी की बचत; और

iii) बड़ी संख्या में विशेषीकृत मशीनों का आविष्कार जिससे श्रम सुगम होता है और एक ही व्यक्ति कई कार्य करने में समर्थ हो जाता है।

11.7.2 अविभाज्यता

उत्पादन के सिद्धान्त में, हम मान लेते हैं कि उत्पादन के घटक जैसे मानव और मशीन पूर्णतया विभाज्य हैं। तथापि, व्यवहार में इस प्रकार के घटक अविभाज्य होते हैं। इस प्रकार के घटकों से विशेषकर अल्पकाल में उनके पूर्ण उपयोग किए जाने तक, उन पर अतिरिक्त व्यय किए बिना बढ़ते हुए निर्गत से मितव्ययिता प्राप्त होती है।

अविभाज्यता तत्त्व को केवल उत्पादन के घटकों तक सीमित रखने की आवश्यकता नहीं है। यह फर्म के प्रकार्यात्मक क्षेत्रों जैसे अनुसंधान और डिज़ायन इकाई, मरम्मत और रखरखाव इकाई, विपणन, वित्त, प्रसंस्करण इत्यादि में भी विद्यमान रह सकता है। फर्म के अनुकूलतम आकार के निर्धारण में इन सभी का पर्याप्त महत्त्व है।

11.7.3 बड़ी मशीनों की मितव्ययिता

यदि फर्म पर्याप्त रूप से बड़ी है, तो यह उत्पादन में लाभप्रद रूप से बड़ी मशीनों और उपकरणों का उपयोग कर सकती है।

पूँजी का आदान बढ़ते हुए आकार के साथ मितव्ययितापूर्ण प्रचालन के लिए सर्वोत्तम अवसर उपलब्ध कराता है क्योंकि यह पैमाने के उत्पादन में वृद्धि करने का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रकट स्रोत है। पूँजी के कुछ मद जैसे सड़क, विद्युत-लाइन इत्यादि विविधतापूर्ण निर्गत के लिए स्थिर रह सकते हैं। इस संबंध में एक सूत्र विकसित किया गया है जिसे दशमलव छः (0.6) नियम के नाम से जाना जाता है। इस नियम के *अनुसार* 0.6 ...

समान दर पर पूँजी लागत में वृद्धि होती है; अर्थात् निर्गत में वृद्धि की दर की तुलना में अधिक धीमी गति से वृद्धि होती है। यह नियम उन औद्योगिक प्रक्रियाओं पर अधिक स्पष्ट रूप से लागू होता है जहाँ पूँजीगत उपकरणों के प्रमुख मदों में गोलाकार अथवा बेलनाकार वस्तुएँ शामिल हैं जैसे भट्ठा, ग्लास फर्नेस, स्टोरेज टैंक इत्यादि। इस बात के प्रमाण हैं कि दशमलव छः (0.6) नियम कम से कम अनेक उद्योगों, जिनमें अल्यूमिनियम, इन्गॉट (धातु पिंड), सीमेन्ट विनिर्माण, ऑक्सीजन का उत्पादन, सिन्थेटिक अमोनिया और रसायन शोधन की अन्य शाखाओं, बेहतर रसायनों का उत्पादन और सागर में जाने वाले बड़े टैंकर सम्मिलित है, में कम से कम प्रमुख प्रक्रियाओं पर लागू होता है।

कई अन्य उदाहरण भी हैं जो इस तर्क की पुष्टि करते हैं कि बड़ी मशीनें या संयंत्र अधिक दक्ष होते हैं। इसलिए, एक फर्म अपने आकार के चयन में अधिक सचेत रहेगा तथा इसका चयन इस प्रकार से करेगा कि उसे भी बड़ी मशीनों और संयंत्र के उपयोग से होने वाली बड़े पैमाने की मितव्ययिता का लाभ प्राप्त हो।

11.7.4 प्रचालन में मितव्ययिता

फर्म के प्रकार्यात्मक क्षेत्रों के साथ कतिपय अविभाज्यता सम्बद्ध होते हैं जो दक्षता के लिए बृहत् आकार का हिमायत करते हैं। दो विशेष क्षेत्र हैं जहाँ हम प्रचालन खर्चों पर फर्म के आकार के यथेष्ट प्रभाव की आशा कर सकते हैं, वे हैं आवश्यक सामग्रियों का भण्डार और प्रसंस्करण इकाई में उत्पादन प्रक्रिया की दीर्घावधि। फर्म का आकार जितना बड़ा होगा, आदानों का इकाई स्टॉक लागत (यूनिट इन्वेंटरी कॉस्ट) और उत्पाद स्टॉक लागत (प्रोडक्ट इन्वेंटरी कॉस्ट) दोनों कम होगा।

11.7.5 सम्बद्ध प्रक्रियाओं में मितव्ययिता

जब विभिन्न विजातीय प्रक्रियाएँ एक ही छत के नीचे स्थित होती हैं, तब फर्म को इस व्यवस्था से लाभ होता है। इससे फर्म की विपणन लागतों, परिवहन लागतों, तापक और प्रशीतक लागतों तथा पैकेजिंग लागतों इत्यादि जैसी कतिपय महत्त्वपूर्ण लागतों में बचत होती है।

11.7.6 सीखने का प्रभाव

यह सामान्यतः मान लिया जाता है कि समय बीतने के साथ कर्मकार जैसे-जैसे 'काम करने के साथ सीखता' जाता है उसकी दक्षता बढ़ती जाती है और समय बीतने के साथ संयंत्र की कार्य कुशलता भी साथ-साथ बढ़ती जाती है। इसे ही हम कार्यकुशलता के संदर्भ में 'सीखने का प्रभाव' कहते हैं।

11.7.7 प्रौद्योगिकी का स्वरूप

संयंत्र के आकार के संदर्भ में हम 'अनुकूलनीय' प्रौद्योगिकी और 'ग़ैर अनुकूलनीय' प्रौद्योगिकी के बीच भेद कर सकते हैं।

प्रौद्योगिकी की अनुकूलनीयता की परिभाषा एक स्थिति के रूप में की गई है, जिसमें कोई व्यक्ति या मशीन अनेक कार्य कर सकता है। इसकी परिभाषा उत्पादन के उपादानों के बीच उच्च प्रतिस्थापन्न लोच के रूप में भी की जा सकती है।

यदि उत्पादन के उपादान 'अनुकूलनीय' हैं तो श्रम विभाजन के लिए अधिक अवसर नहीं होता है क्योंकि एक मानव अथवा मशीन अनेक कार्य कर सकता है। एक लघु फर्म इस तरह के उपादानों को पसंद करता है। इस मामले में मानव श्रम अथवा मशीनों की अविभाज्यता विद्यमान

नहीं होगी। इस स्थिति में फर्म के बहुत बड़ा होने की आवश्यकता नहीं होती है। लघु आकार होने पर भी यह उत्पादन के उपादानों की अनुकूलनीयता के कारण उतना ही दक्ष हो सकता है ('K' अथवा पूँजी के मामले में। तथापि 'L' अथवा श्रम के अधिक होने से फर्म अभी भी श्रम के मामले में बड़ा हो सकता है)।

ग़ैर-अनुकूलनीय आदानों के मामले में, अपनी अविभाज्यता से बचने के लिए फर्म को पर्याप्त रूप से बड़ा होना पड़ता है और दक्षता के लिए अनुकूलतम श्रम विभाजन लागू करना पड़ता है। यह उत्पादन में उच्च स्वचालन का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

11.7.8 निर्गत दर

यदि निर्गत दर में निर्गत की मात्रा के साथ परिवर्तन होता है तब औसत लागत में ह्रास अथवा वृद्धि की प्रवृत्ति अलग-अलग हो सकता है।

ए. अलचिआन और डब्ल्यू.आर. एलेन जैसे शोधकर्ता ने ऐसी स्थिति का विश्लेषण किया है। जब निर्गत दर को स्थिर रखा जाता है तो अधिक मात्रा के साथ औसत प्रति इकाई लागत में ह्रास होता है। किंतु, निर्गत की मात्रा के स्थिर रहने पर निर्गत की प्रति इकाई औसत लागत में कहीं अधिक दर पर वृद्धि होती है। तथापि, जब मात्रा और दर दोनों में समानुपातिक वृद्धि होती है तो पहले निर्गत की प्रति इकाई औसत लागत घटती है और तब लगभग स्थिर औसत लागत के अन्तराल के पश्चात् यह निर्गत के आकार के फलन कार्यक्रम के रूप में बढ़ने लगता है। फर्म की अनुकूलतम आकार के संदर्भ में यह एक महत्त्वपूर्ण प्रेक्षण है।

11.7.9 विविध संयंत्र प्रचालन

कभी-कभी, एक फर्म कई संयंत्रों में विकेन्द्रीकृत प्रचालन रखना पसंद कर सकती है। फर्म द्वारा इस तरह के पसंद कई घटकों द्वारा निर्देशित होते हैं जिनमें से अधिक महत्त्वपूर्ण निम्नलिखित है :

i) परिवहन लागत, यदि बहुत अधिक है, तो इसे भिन्न भिन्न स्थानों पर स्थित आपूर्ति स्रोतों अथवा बाज़ार के मुख्य केन्द्रों के निकट संयंत्र की स्थापना करके बचाया जा सकता है।

ii) प्रत्येक संयंत्र को फर्म द्वारा आपूर्ति की जाने वाली उत्पाद-शृंखला में से किसी विशिष्ट उत्पाद के विनिर्माण के लिए कहा जा सकता है ताकि एक संयंत्र में विविधिकरण की प्रक्रिया से आने वाली अदक्षता से बचा जा सके। फर्म को इस प्रकार के विविधिकरण से लाभ होने की संभावना रहती है।

iii) फर्म को प्रचालन संबंधी स्वतंत्रता मिलती है। यह मंदी की स्थिति में अथवा रख-रखाव के लिए पूरे फर्म में प्रचालनों को अस्त-व्यस्त किए बिना एक या अधिक संयंत्र को बंद कर सकता है।

iv) फर्म में एक से अधिक संयंत्रों के रहने पर श्रमिक समस्या, विद्युत की कमी इत्यादि के कारण संयंत्र के बंद होने की संभावना के कतिपय जोखिमों से बचा जाता है।

v) फर्म अपने संयंत्र को उपभोक्ता केन्द्रों के निकट स्थापित करके बाज़ार में बेहतर रूप से प्रवेश कर प्रतिस्पर्धियों के साथ प्रभावशाली तरीके से प्रतिस्पर्धा कर सकती हैं। तथापि, यदि संयंत्र उसी तैयार उत्पाद के लिए कुछ अर्धनिर्मित निर्गत के विनिर्माण में संलग्न है तो इसका कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है क्योंकि परिवहन लागत अधिक होगी।

बोध प्रश्न 2

1) आप बड़े पैमाने की मितव्ययिता और अपमितव्ययिता से क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विनिर्माण संयंत्र के लिए बड़े पैमाने की मितव्ययिता के कुछ महत्त्वपूर्ण स्रोतों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) दशमलव छः (0.6) नियम क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

11.8 अन्य निर्धारक

हमने ऊपर भाग 11.7 में फर्म के आकार को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकीय घटकों का विश्लेषण किया है। इसके अतिरिक्त, अन्य घटकों द्वारा भी फर्म का आकार प्रभावित होता है। हम इन अन्य घटकों पर नीचे चर्चा करेंगे।

11.8.1 प्रबन्धकीय घटक

जब एक फर्म का आकार बड़ा हो जाता है तो उसे प्रबन्धकीय मितव्ययिता लाभ प्राप्त होता है। एक बड़ा फर्म प्रबन्धन का कार्य विभाजित करने और इसका दायित्व विशेषज्ञों को सौंपने की स्थिति में होता है। प्रत्येक कार्य को निष्पादित करने के लिए बड़ा फर्म मनोवृत्ति और अनुभव की दृष्टि से सबसे उपयुक्त व्यक्ति का चयन करता है। एक बड़ा फर्म आधुनिक यांत्रिक उपकरणों को स्थापित और उसका उपयोग कर सकता है जिससे दक्षता बढ़ती है। एक बड़े फर्म में प्रबन्धन, के क्षेत्र में अनुसन्धान और प्रयोगों का कार्य अधिक सूक्ष्मता से होता है, और बड़े फर्म में उत्पादन, छोटे फर्म की तुलना में अधिक संगठित और नियोजित रूप से होता है।

एक फर्म का आकार सफलतापूर्वक कहाँ तक बढ़ सकता है यह इस बात पर निर्भर करेगा कि फर्म विभिन्न विभागों और विशेषज्ञों में समन्वय की समस्या को कैसे हल करता है।

11.8.2 वित्तीय घटक

पूँजी जुटाने का कार्य फर्म के आकार को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है क्योंकि विभिन्न प्रकार की फर्में अलग-अलग मात्रा में ऋण प्राप्त कर सकती हैं और फर्मों के लिए ऋण की ब्याज दर भी अलग-अलग होती हैं। दीर्घ कालीन पूँजी उगाहने में, बड़ा सार्वजनिक निर्गम (पब्लिक इश्यू) छोटे सार्वजनिक निर्गम की अपेक्षा सस्ता होता है। यथेष्ट रूप से बड़ी औद्योगिक इकाइयों को बैंकों से कार्यशील पूँजी प्राप्त करने में अधिक सुविधा होती है क्योंकि आकार से ऋणशोधन क्षमता, स्थायित्व और सुरक्षा का पता चलता है और बड़ी वित्तीय संस्थाओं का झुकाव बड़ी इकाइयों की ओर अधिक होता है।

11.8.3 विपणन घटक

अनुकूलतम विपणन इकाई बड़े पैमाने पर खरीद और बिक्री की मितव्ययिता और अपमितव्ययिता का परिणाम होता है। दक्षतापूर्ण खरीद और बिक्री अंतिम लाभ पर उतना ही प्रभाव डालती हैं जितना कि दक्षतापूर्ण विनिर्माण। एक छोटे फर्म की तुलना में बड़ा फर्म आपूर्तिकर्ता के साथ मोल-भाव करने की बेहतर स्थिति में होता है। यह विशेषज्ञ खरीदारों जिन्हें पूरी वैज्ञानिक जानकारी होती है और जो अधिक साधन सम्पन्न होते हैं को खरीदारी का दायित्व सौंप सकता है। खरीदारी संबंधी विशेष विवरण अधिक व्यापक हो सकते हैं जिससे तैयार उत्पाद की गुणवत्ता अधिक बेहतर और अधिक समरूप होती है, फलत: इसे अधिक मूल्य पर बेचा जा सकता है।

11.8.4 जोखिम घटक

व्यापार सामान्यत: जोखिमों और अनिश्चितताओं से भरा होता है। फर्म ऐसी स्थिति से निपटने में उतना ही सक्षम होगा जितना कि वह बड़ा होगा। जोखिम और अनिश्चितताएँ अनेक रूपों में प्रकट होती हैं : (i) उत्पाद के लिए माँग में अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है (ii) सरकारी नीतियाँ और व्यापारिक परिवेश बदल सकती हैं।

एक बड़ा फर्म इस तरह के जोखिमों और अनिश्चितताओं का सामना करने के लिए विभिन्न उपाय कर सकता है। यह बड़े पैमाने पर उत्पादन की मितव्ययिताओं से अधिक वंचित हुए बिना अपने उत्पाद, अपने बाज़ार और अपने आपूर्तिकर्ताओं में परिवर्तन कर सकता है। कुल मिलाकर जोखिम को कम करने के लिए विविधिकरण की रणनीति अधिक उपयोगी उपाय है। यह 'मास्ड रिजर्व' एकत्र आरक्षित के साधन का उपयोग कर सकता है। इस स्थिति में, एक फर्म आकस्मिक अथवा अप्रत्याशित माँगों या आपात स्थिति के लिए उपकरणों, स्टॉक, नकद और संभवत: श्रमिकों का आरक्षित भण्डार रखता है।

एक बड़े फर्म के पास आकस्मिक हानियों को संतुलित करने का अधिक अवसर होता है। यह औसतों के नियम के आधार पर इस तरह की हानियों का पूर्वानुमान कर सकता है और उनसे बचने के लिए आवश्यक तंत्र बनाए रख सकता है।

11.8.5 रोज़गार घटक

एक बड़ा फर्म दक्ष और अनुभवी कर्मचारियों को आकर्षित करने की स्थिति में रहता है जो पुन: फर्म की उत्पादकता और दक्षता को बढ़ाने में योगदान करता है। बड़े फर्मों द्वारा दी जाने वाली रोज़गार सुरक्षा छोटे फर्मों की अपेक्षा अधिक है।

11.8.6 विविध घटक

बड़े फर्मों को प्राप्त होने वाले कुछ अन्य लाभ संक्षेप में इस प्रकार है :

i) फर्म का आकार आपूर्तिकर्त्ताओं, प्रतिस्पर्धियों और उपभोक्ताओं पर इसकी सर्वोच्चता का तात्कालिक निर्धारक होता है,

   क) एक बड़ा फर्म सर्वोत्तम स्थान, सर्वोत्तम प्रौद्योगिकी' और सर्वोत्तम विशेषज्ञ खरीद सकता है।

   ख) एक बड़ा फर्म छोटे प्रतिस्पर्धियों को प्रतिस्पर्धा से बाहर कर सकता है,

   ग) एक बड़ा फर्म नए प्रतिस्पर्धियों के प्रवेश को अवरुद्ध कर सकता है।

ii) एक बड़े फर्म को अधिक आर्थिक लाभ होने की संभावना रहती है। इस तरह के लाभ का एक अंश फर्म के बड़े आकार के कारण बाज़ार में प्राप्त शक्ति के परिणामस्वरूप होता है।

iii) बेकार उत्पादों को उप-उत्पाद के रूप में उपयोग करने से बड़े पैमाने की मितव्ययिता आती है। एक बड़ा फर्म इस तरह के उत्पादों का स्वयं उपयोग कर सकता है अथवा इसे दूसरों को उपलब्ध करा सकता है। बड़े फर्मों को इस तरह के सहायक व्यापार से भारी लाभ हो सकता है।

11.9 आकार की सीमाएँ

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, अधिकांशतया किसी भी फर्म का निरंतर विकास जारी नहीं रह सकता है तथा यह निरंतर विकास के साथ बड़े पैमाने का लाभ नहीं अर्जित कर सकता है। कभी न कभी एक स्थिति आती है जहाँ उत्पादन के पैमाने में और विस्तार करने से उत्पादन लागत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना शुरू हो जाता है। यह स्थिति तब आती है जब एक फर्म अपने उत्पादन के पैमाने में विस्तार करके बड़े पैमाने की अपमितव्ययिता का अनुभव करने लगता है।

बड़े पैमाने की अपमितव्ययिता के अनेक कारण हैं। इनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं :

11.9.1 प्रबन्धकीय बाधाएँ

जब एक फर्म एक बिंदु से आगे विस्तार करता है तो इसके प्रबन्धन और निर्णय करने की प्रक्रिया के सम्मुख नई चुनौतियाँ उपस्थित होती हैं। यदि इन चुनौतियों का सामना सही ढंग से नहीं किया जाए तो फर्म की उत्पादकता और दक्षता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

निर्णय लेने में अधिक समय लगता है। फर्म की विभिन्न इकाइयों के बीच संचार अधिक जटिल हो जाता है और परोक्ष समन्वय प्रक्रिया कम प्रभावोत्पादक रह जाती है।

बड़ी संख्या के संदर्भ में प्रबन्धन पद्धति पद सोपानिक प्रकृति का होगा। फर्म का आकार जैसे-जैसे बढ़ता है पद सोपान व्यवस्था अधिक सघन हो जाती है। इसलिए विभिन्न मध्यवर्ती स्तरों पर लिए गए निर्णयों में समन्वय करने की केन्द्रीय प्रबन्धन की जिम्मेदारी काफी बढ़ जाती है और यह सभी प्रबन्धकीय समस्याओं का मूल है, यह फर्म के विकास में वास्तविक रूप से बाधाएँ पैदा करता है और बड़े पैमाने की अपमितव्ययिता का प्रमुख स्रोत है।

11.9.2 तकनीकी बाधाएँ

सिद्धान्ततः, एक फर्म अनुकूलतम आकार तक पहुँच सकता है और फिर इसे दोहरा सकती हैं। इससे पैमाने का स्थिर उत्पादन होगा। किंतु व्यवहार में यह संभव नहीं है। एक बिंदु से आगे, पैमाने के उत्पादन में और वृद्धि तकनीकी अदक्षता को जन्म देता है। उदाहरण के लिए, मशीन जितना बडी होगी, उसके लिए उतने ही अधिक स्थान की आवश्यकता होगी। इसलिए, भवन बहुत बड़ा होगा

जिसके लिए सुदृढ़ नींव की जरूरत होगी। यह आवश्यक नहीं कि इस प्रकार की शृंखला का पूरी तरह से पालन किया जाए। इस बात की पूरी संभावना है कि समय बीतने के साथ जब संयंत्र का आकार बढ़ता है आदानों की असमानुपातिक वृद्धि हो। इस प्रकार अनुपातहीन ढंग से वृद्धि के कारण औसत लागत वक्र बड़े पैमाने की अपमितव्ययिता के कारण ऊपर की ओर बढ़ने लगता है।

11.9.3 परिवहन लागत और बाज़ार सघनता

किसी फर्म के आकार के विस्तार में कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण बाधाएँ भी हैं। किसी भी अन्य लागत के समान परिवहन लागत भी एक बिंदु के बाद लागत वृद्धि नियम के अंतर्गत है। घटक आदान के रूप में परिवहन के उपयोग में जैसे-जैसे वृद्धि होती है, परिवहन का औसत लागत बढ़ने लगता है। परिवहन में वृद्धि होने लगती है। परिवहन लागत का उत्पादन की कुल लागत का हिस्सा होने के कारण कुल लागत में वृद्धि होने लगती है और इससे उत्पाद प्रतिस्पर्धा से बाहर हो सकता है।

परिवहन लागत एक बड़ी बाधा के रूप में कार्य करता है विशेषरूप में जहाँ यह कुल लागत का एक बड़ा हिस्सा होता है।

11.9.4 पूँजी की कमी

उत्पादन के पैमाने पर एक बिंदु से आगे एक औद्योगिक फर्म को वित्तीय बाधा का सामना करना पड़ सकता है। विस्तार के आरम्भिक चरण में एक फर्म के लिए पूँजी बाज़ार से धन उगाहना तथा वित्तीय संस्थाओं से पूँजी प्राप्त करना आसान नहीं होता है किंतु एक बिंदु से आगे फर्म की वित्तीय आवश्यकता ज्यामितीय क्रम में बढ़ती है। इस चरण में इसे बड़े पैमाने पर धन की जरूरत होती है जो इसे किसी भी स्थिति में प्रचुर रूप से उपलब्ध नहीं होती है। इस परिवेश में, फर्म को अपना आकार सीमित रखने पर बाध्य होना पड़ता है तथा और भावी विस्तार को तब तक टालना पड़ना है जबतक कि यह आवश्यक वित्त के लिए अधिक लागत वहन करने में सक्षम न हो जाए तथा ऐसा करने का इच्छुक नहीं हो। वित्त के उच्च लागत से उत्पादन लागत में भी वृद्धि होगी।

11.9.5 व्यक्तिगत सीमाएँ

एक फर्म के आकार की वृद्धि में उद्यमी योग्यता और क्षमता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। कभी-कभी उद्यमी फर्म का छोटा आकार पसंद करता है जिससे कि उनका प्रबन्ध प्रभावशाली तरीके से किया जा सके। ऐसे उद्यमी बड़ा फर्म पसन्द नहीं कर सकते हैं क्योंकि इसके लिए अधिक प्रयासों और समन्वय की नई दक्षताओं की आवश्यकता पड़ती है अन्यथा व्यापार पर प्रभावशाली नियंत्रण में कमी इत्यादि आ जाती है। वे उन फालतू समस्याओं के चक्कर में नहीं पड़ना चाहते हैं और इसका कारण इन समस्याओं से निपटने में उनकी अक्षमता हो सकती है अथवा वे अपने छोटे व्यापार की आय, अधिकार और सम्मान से ही संतुष्टी महसूस कर सकते हैं।

11.9.6 श्रमिक समस्याएँ

श्रमिक समस्याओं के कारण भी फर्म का विकास अवरुद्ध होता है। फर्म के आकार के विस्तार के साथ ही, श्रम बल की संख्या भी बढ़ती है। श्रमिक ट्रेड यूनियनों में संगठित हो जाते हैं। ट्रेड यूनियनों को प्राप्त सांविधिक संरक्षण के अलावा बड़ी संख्या में श्रमिक स्वयं अधिक अधिकारों का प्रयोग करने में सक्षम हो जाते हैं। जब तक कि समुचित ढंग से इन्हें व्यवस्थित नहीं किया जाए और समन्वय स्थापित नहीं किया जाए, इस प्रकार के मजदूर संघ उद्यमियों के लिए समस्या खड़ी कर सकते हैं तथा फर्म के और विस्तार को सीमित कर सकते हैं।

11.9.7 सामाजिक अथवा संस्थागत बाधाएँ

समाज, बाज़ार शक्ति जो मूल्य में वृद्धि कर सकती है के प्रति शंकालु होता है। इसलिए विनियमों

और 'एंटीट्रस्ट' विधानों के माध्यम से आकार पर प्रतिबंध लगाया जाता है।

संक्षेप में, हमने ऊपर फर्म के विकास में बाधक विभिन्न घटकों का सविस्तार वर्णन किया है। इसलिए, एक फर्म को अपने लिए अनुकूलतम आकार का चयन करना पड़ता है, अर्थात् यह एक बिंदु तक अपने प्रचालन के पैमाने का विस्तार कर सकता है, उससे आगे नहीं।

11.10 आकार का चयन

हमने ऊपर विभिन्न घटकों पर चर्चा की जो बड़े पैमाने की मितव्ययिता उत्पन्न करके फर्म के आकार का संवर्द्धन करते हैं। हमने बड़े पैमाने की अपमितव्ययिता के विभिन्न स्रोतों को भी चिन्हित किया है। प्रत्येक फर्म अनुकूलतम आकार प्राप्त करना चाहता है अर्थात् जहाँ इसकी बड़े पैमाने की मितव्ययिता समाप्त हो जाती है किंतु बड़े पैमाने की अपमितव्ययिता भी शुरू नहीं होती है।

अनुकूलतम का यह बिंदु अलग-अलग उद्योगों में भिन्न-भिन्न हो सकता है। किसी उत्पादन व्यवसाय और प्रदत्त प्रौद्योगिकी में छोटा फर्म अनुकूलतम होता है जबकि कुछ अन्य व्यवसायों में औद्योगिक इकाई तब तक आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं हो सकती है जब तक कि इसका आकार यथेष्ट रूप से बड़ा न हो।

एक फर्म अधिकतम लाभ कमाने का प्रयास करता है। इस प्रयास में यह निर्गत के किसी भी स्तर पर उत्पादन लागत को न्यूनतम करना चाहता है। तथापि, वास्तविक निर्गत चयन का निर्धारण माँग और लागत घटक दोनों के द्वारा होता है। मान लीजिए प्रत्येक फर्म अनुकूलतम आकार तक पहुँचने का प्रयास करता है अर्थात् औसत लागत वक्र का न्यूनतम बिन्दु निरर्थक है। एकाधिकारवादी प्रतिस्पर्धा के चैम्बरलेन मॉडल में, उप-अनुकूलतम संयंत्र आकार पर संतुलन स्थापित होता है।

बोध प्रश्न 3

1) फर्म के विकास में सहायक प्रबन्धकीय घटक क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) फर्म के विकास में कौन से वित्तीय घटक सहायक होते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) फर्म के विकास में कुछ महत्त्वपूर्ण बाधाओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

11.11 सारांश

उद्योगों का आकार अलग-अलग होता है; मोटे तौर पर उनका वर्गीकरण बृहत् और लघु उद्योगों में किया जाता है। बृहत् उद्योगों को बड़े पैमाने की मितव्ययिता का लाभ मिलता है किंतु ऐसा सिर्फ एक बिंदु तक होता है; इससे आगे बड़े पैमाने की अपमितव्ययिता के अनेक स्रोत हैं। प्रत्येक औद्योगिक फर्म अनुकूलतम बिंदु तक पहुँचने का प्रयास करता है। तथापि, यह अनुकूलतम एक उद्योग से दूसरे उद्योग में, एक उत्पाद से दूसरे उत्पाद में और एक प्रौद्योगिकी से दूसरे प्रौद्योगिकी में अलग-अलग हो सकता है। यही कारण है कि बड़े उद्योगों और छोटे उद्योगों दोनों का सह अस्तित्त्व रहता है; बहुधा ये एक दूसरे के पूरक होते हैं। बहुधा लघु उद्योगों के सहायक के रूप में कार्य करते हैं।

11.12 शब्दावली

अनुकूलतम संयंत्र आकार : संयंत्र का वह आकार जिस पर दीर्घकालीन औसत लागत न्यूनतम होता है।

बड़े पैमाने की मितव्ययिता : उत्पादन के विस्तारित स्तर के परिणामस्वरूप दीर्घकाल में उत्पाद के औसत लागत में कमी।

सीखने का प्रभाव : प्रचालन संबंधी अनुभवों के परिणामस्वरूप तकनीकी प्रगति।

एकाधिकार : वह स्थिति जिसमें किसी सजातीय उत्पाद जिसका कोई स्थानापन्न नहीं होता है और उसके अनेक खरीदार होते हैं का सिर्फ एक ही फर्म द्वारा आपूर्ति किया जाना।

11.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ

ई.ए.जी. रॉबिनसन; (1932). *दि स्ट्रक्चर ऑफ कम्पीटिटिव इण्डस्ट्री*, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस शिकागो

एच.एस. होवे; (1930). *इण्डस्ट्रियल इकनॉमिक्स, एन एप्लाइड एप्रोच*, मैकमिलन

ए. मार्शल; (1930). *एलीमेन्ट्स ऑफ इकनॉमिक्स ऑफ इण्डस्ट्री*, मैकमिलन एण्ड कम्पनी, लंद

जे.ई. बेन (1968). *इण्डस्ट्रियल ऑर्गेनाइजेशन*, विली एण्ड सन्स, न्यूयार्क

जे.एस. बेन (1966). *बेरियर्स टू न्यू कम्पटीशन*, केम्ब्रिज यूनिवर्सिटीज प्रेस

11.14 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 11.2 देखिए।
2) भाग 11.4 देखिए।
3) भाग 11.3 देखिए।
4) भाग 11.5 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 11.6.2 देखिए।
2) भाग 11.7 देखिए।
3) उपभाग 11.7.3 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) उपभाग 11.8.1 देखिए।
2) उपभाग 11.8.2 देखिए।
3) भाग 11.9 देखिए।